UNIVERSAL LIBRARY
OU_182294
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—68—11-1-68—2,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 N26C Accession No. H3601

Author नास्तिक, महावीर.

Title चिनगारी. 1957.

This book should be returned on or before the date last marked below.

चिनगारी

[कविता—संग्रह]

VIJAY AGE
3-6-456, Hima
HYD. A

लेखक
महावीर नास्तिक

मार्क्सवादी प्रकाशन
१०१६, राजा मन्डी,
आगरा

प्रथम संस्करण १० मार्च १९५७
मूल्य ॥=)

मुद्रक

चिनगारी

"*इस्का*" की स्मृति में "*चिनगारी*"
भारत की कोटि-कोटि शोषित जनता को

क्रम

	पृष्ठ		पृष्ठ
(१) चिनगारी	९	(२२) स्टूडेन्ट कन्सेशन	२६
(२) कला को फौज का गाना	१०	(२३) गीतकार	२६
(३) अपने कवि से	१०	(२४) नेता जी का गीत	२७
(४) सर्वहारा वर्ग	११	(२५) भारत माता	२८
(५) मानव	१२	(२६) मेरा परिचय	२८
(६) रिक्सा वाला	१३	(२७) उम्मीदवार	२९
(७) मध्यम वर्ग	१३	(२८) दुमदार आदमी	३०
(८) मैं दुकानदार हूँ	१४	(२९) मैं भी सर्जन हूँ	३१
(९) पूँजीपति	१५	(३०) बन्दी कामरेड	३१
(१०) भगवान की मौत	१६	(३१) वेश्या के कमरे पर	३२
(११) कविराज	१६	(३२) मनुष्य	३३
(१२) नचिकेता	१७	(३३) कवि क्या गायेगा	३४
(१३) युग की मांग	१८	(३४) भूदान यज्ञ	३५
(१४) बंजारा	१९	(३५) विरासत	३६
(१५) आवारा सूअर	२०	(३६) आवाहन	४०
(१६) मनकामेश्वर	२०	(३७) युगवाणी के कवि	४३
(१७) कुत्ते और आदमी	२२	(३८) अपने आलोचकों से	४४
(१८) ठंडी हवा	२३	(३९) कामरेड	४४
(१९) धर्मों का फल है	२३	(४०) श्रद्धांजलि	४६
(२०) धुँआ	२४	(४१) सुबह का आना	४८
(२१) मैं चोर हूँ	२५		

कविता का लक्ष्य

आज सारे के सारे मत मतान्तर इस बात को एक स्वर से स्वीकार कर चुके हैं कि आज की कविता गतिशील है परन्तु निकट भविष्य में उसका लक्ष्य क्या होगा इस बात को निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता. मैं पूछता हूँ क्या, आज का कवि लज्जा निवारण को मैले कुचैले, दुर्गन्ध युक्त, जर्जर परिधानों को शरीर से लपेटे रोटी-रोटी के क्रंदन से आकाश को भी कँपा देने वाले मानव को उपेक्षा की दृष्टि से देख कर मुँह फेर लेगा अथवा उन मैले कुचैले दुर्गन्ध युक्त, जर्जर परिधानों को शरीर से गिरा कर यथार्थ वाद का ढ़िंढोरा पीटता हुआ समाज के सम्मुख ला खड़ा करने की धृष्टता करेगा, जिससे लज्जा भी लज्जित हो उठे, कुवासनायें उभड़ सकें सब लोग अश्लीलता-अश्लीलता कहते हुये आखें मूँद लें, और अश्लीलता के इस नवीन आन्दोलन में प्रगति के चरण रुक जायें.

या वह उस मानव को उसी निकृष्टतम रूप में समाज की नाक के नीचे लाकर खड़ा कर देगा जिससे समाज की नाक भी सड़ने लगे और तब भी अगर उसकी तन्द्रा भंग नहीं होती तो वह उस मानव को समाज के सर पर कदम रखाता हुआ आगे बढ़ाने से भी नहीं चूकेगा. जब तक कि समाज के दृढ़ स्तम्भ त्राहिमाम्-त्राहिमाम् कहते हुये मृतप्रायः होकर न गिर पड़ें.

तब कविता का लक्ष्य क्या होगा इसमें सन्देह की गुंजायश ही नहीं.

१ मार्च १९५७ महावीर नास्तिक.

नास्तिक जी की कविताएँ

नास्तिक जी संभवतः अपने वर्ग के पहले कवि हैं, जिन्होंने आज के पूँजीवादी समाज, वर्तमान शासन, प्राचीन रूढ़ियाँ तथा धर्म ढोंग पर एक साथ इतना ठोस, इतना करारा प्रहार किया है. वह युग के प्रति जागरूक हैं, जन जागृति का उन्हें आभास है तभी तो वह प्रस्तुत संग्रह की पहली कविता चिनगारी में कितनी दृढ़ता, कितने विश्वास के साथ कह उठते हैं:—

एक हवा का झौंका
आने भर की देरी है,
जन जन के मन की
यह छोटी सी चिनगारी,
द्रुत गति से
फूस के छप्परों में फैलेगी
मन्दिर, मस्जिद, गिर्जों को मेटेगी,
शोषण सत्ता को फूंकेगी,
प्राचीन रूढ़ियाँ रौंदेगी,
पूँजीवाद जलायेगी ही.

उनकी कविता में न रस है, न अलंकार, न संगीत की तुकांत पदावली और न वह कविता को विलास की वस्तु मानते हैं जिससे श्रोतागण शराबी की तरह झूमने लगें. रूस के सुप्रसिद्ध कवि मायकावस्की की तरह "मैं उसको कवि नहीं मानता जो चायघरों में प्रणय की कविताएँ मिमियाता फिरे", वह 'कविराज' में प्रेम कवियों पर टूट पड़ते हैं—

शायद किसी के प्रेम में बेकरार हैं
जानते अक्षर दो चार हैं
तभी मजनूं से झूम-झूम कर,
गाते हैं गीत प्यार के.
मिलन के इन्तजार के.

वह तो आज के कवि को सर्जन को रूप में देखना चाहते हैं—

मैं भी सर्जन हूँ
प्रगति के थपेड़ों से बेहोश कर
लिटा दिया है समाज को
साहित्य के धरातल पर
कहता हूँ प्राचीन संस्कृति
गल सड़ चुकी है
तेज नुकीले भावों से
उसे काट छाँट कर निकाने में व्यस्त हूँ,
उसके स्थान पर नयी संस्कृति बैठा
समाज को नव जीवन दे डालूँगा.

आज के समाज के प्रति, वर्तमान शासन (जनतंत्र की डींग मारने वाले कांग्रेसी कुराज) के प्रति उनके मन में असन्तोष है परन्तु वह असन्तोष केवल असन्तोष बन कर ही नहीं रह जाता बल्कि वह युग की मांग में विद्रोहिन हो कर चीख उठते हैं. जवाहरलाल की जय बोल कर एम० एल० ए०, एम० पी०, मिनिस्टर तथा प्रीमियर बनने वाले नेताओं के गीत की धज्जियां उड़ाते हैं. उम्मीदवारों सगे बाप की कसम का भी विश्वास नहीं करते.

नेताओं को अभिनेता की तरह इधर-उधर नाचने वाला नचिकेता भर मानते हैं. साथ ही सर्वहारा वर्ग के प्रतिनिधियों पर शासन वर्ग के जालिमाना अत्याचार, कामरेड भारद्वाज का खून उनकी लेखनी में चीख उठता है :—

मैं स्वयं नहीं मरा
मुझको मारा गया है
क्योंकि समाज के पहरेदार
हम जैसे नव निर्माण के समर्थकों का
मर जाना ही बेहतर समझते हैं.

कवि जानता है अभी हमें आजादी नहीं मिली है यह तो विदेशी पूँजीपतियों के चंगुल से मुक्ति के बाद देशी पूँजीपतियों की गुलामी मात्र है. तभी तो वह "आवारा सूअर" नामक कविता में आज की झूँठी आजादी की धज्जियाँ उड़ाते हैं. तथा आह्वान में अपनी मंजिल पर पहुँचने के लिये अपनी प्रेयसि को आमन्त्रित करते हैं. फूलों की सेज पर सोने के लिये नहीं, चुम्बन आलिंगनों के लिये नहीं, घर में गुड़ियां बन कर बैठने के लिये नहीं बल्कि अपने साथ कदम से कदम मिलाकर जीवन संघर्षों से जूझने के लिये क्रांति पथ पर बढ़ने के लिये. भारत की कोटि कोटि जनता मजदूर किसानों का शासन लाने के लिये.

इन्कलाब जिन्दाबाद

प्रकाश सक्सैना

एम. ए. एल एल. बी.

चिनगारी

तुम देख रहे हो
सुलग रही है,
जन-जन के मन में
आज एक चिनगारी,

एक हवा का झोंका
आने भर की देरी है,
जन-जन के मन की
यह छोटी सी चिनगारी,
द्रुत गति से
फूँस के छप्परों में फैलेगी
मन्दिर, मस्जिद, गिर्जों को मेटेगी,
शोषण सत्ता को फूँकेगी,
प्राचीन रूढ़ियाँ रौंदेगी,
पूँजीवाद जलायेगी ही,
जन,जन के मन की
यह छोटी सी चिनगारी,

मुक्ति गगन में
मुक्ति खड़ी हहरायेगी,
जन जन के मन की
यह छोटी सी चिनगारी.

*

कला की फौज का गाना

हम कार्ल मार्क्स के अनुयायी हैं.
लेनिन के लाल सिपाही—हैं.
प्राचीन रूढ़ियों को तोड़ेंगे,
जन ज्वालामुखियों को फोड़ेंगे,
जनता का जयनाद गुंजायेंगे.
हम आगे बढ़ते जायेंगे.

हम लाल क्रांति के अनुयायी हैं.
लेनिन के लाल सिपाही हैं.
वर्ग विषमता को मेटेंगे,
जन सागर से जा भेटेंगे,
समता स्वर्ग धरा पर लायेंगे.
हम आगे बढ़ते जायेंगे.

हम साम्यवाद के अनुयायी हैं.
लेनिन के लाल सिपाही हैं.
हम कलाकार, हम चित्रकार,
हम कवि, लेखक, हम साहित्यकार,
लाल निशान उड़ायेंगे.
हम आगे बढ़ते जायेंगे.

*

अपने कवि से

इन भूल लजीली आखों को,
मत गोरी बाहों पर ललचा.
मत खोज प्रिय की नई उपमा,
दृष्टि नहीं होठों पर अटका.

मत करे प्रतीक्षा खड़ा किसी,
चाहे, अनचाहे द्वारे पर.
मत नचा लेखनी को मन के,
यूँ कुत्सित एक इशारे पर.

मत बैठ किसी मधुशाला में,
ह्विस्की के डौज उड़लने दे.
मधुबाला के सङ्ग शराबी,
दौर पै दौर मचलने दे.

या बैठ किसी तरु छाया में,
दुख का सुख का अवसाद लिये.
अपने अन्तर में अपनी ही,
चिर याद लिये, फरियाद लिये.
मत उलझो दुख सुख घेरे में,
मत अपनी गाथा गाओ कवि.
मत भूल सत्य की निष्ठुरता,
सपनों के महल बनाओ कवि.

छोड़ो कल्पना के दामन को,
जिन्दगी तुम्हें पुकार रही.
धरती पर उतरो कुटिया में आओ
जन-जन की मनुहार यही.

*

सर्वहारा वर्ग

उन कंकालों में क्या जीवन है,
जिन प्राणों की आकुल आहें,
प्रतिक्षण तड़पा करती हैं,
मत्य के आलिंगन को.

उन माँगों में क्या सिन्दूर भरा,
जो सरे आम बाजारों में.
अपनी अस्मत बेचा करती हैं,
रोटी के सूखे टुकड़ों को.

वह क्या जाने आजादी
जो घूँसे, ठोकर, गाली का अभ्यासी.
प्रतिक्षण पशुवत रिक्शा खींचा करता है,
अन्न के दो दो दानों को.

क्या उसको मानव कह दूँ,
जो चाट रहा झूँठे दोने.
छीन छीन कुत्तों के मुख से,
अपनी भूख मिटाने को.

*

मानव

धरती की छाती पर,
पके फोड़ों के समान,
उठे हुये इन कच्चे घरों में,
रहते हैं,
बिलबिलाते कीड़ों के समान,
मानव.
ग दी नाली की बदबू में सड़ते हैं,
शोषण की चक्की में पिसते हैं,
आधे पेट खाकर सोते हैं,
हैजा, क्षय, बीमारियों से,
बेमौत मरते हैं,
मानव.

रिक्शा वाला

जेठ की ठीक दुपहरी है.
धरती गर्म तवे सी तपती
सूरज की किरणें आग उगलतीं
सेठ, साहूकार, बाबूसाहब
बिजली के पंखों के नीचे गद्दों पर सोये हैं.
वर्फ घरों में विधान सभाओं की बैठक जमती है.
पर मैं ढाई मन की लाश खींचता
चौक चाँदनी तक दो आने में.
मैं अभिशापित हूँ,
रिक्शा वाला हूँ,
क्योंकि मैंने श्रमिक वर्ग में जन्म लिया है.
दिन भर में
इस खून पसीने की मेहनत से
चार रुपये एकत्रित कर पाता हूं,
दो रुपया मालिक को देता हूँ,
दो में स्त्री बच्चों का पेट पालता
खुद अध खाये ही भूखा सो जाता हूँ.
मैं अभिशापित हूँ,
रिक्शा वाला हूँ,
क्यूँकि मैंने श्रमिक वर्ग में जन्म लिया है.

*

मध्यमवर्ग

मैंने जाना है जीवन की झूँठी झूँठी बात है.
चंदा की है नहीं चाँदनी काली काली रात है.
नभ से जो बरसीं बूँदें,
देखो मिट्टी में मिल गईं.

चम्पा गुलाब की पंखड़ियों पर,
कुछ हीरे सी खिल गईं.
ज्यों कुटियों की भीड़ भाड़ में महलों की चमकती पांत है,
मैंने जाना है जीवन की झूँठी झूँठी बात है.

*

मैं दूकानदार हूँ

मैं दूकानदार हूँ
अब तक बेचा करता था
दो दो पैसे में
नटखट जापानी गुड़िया.
कमर झुकी झुकी सी
ऊँचे सैंडिल वाली
मेम साहिब कहलाती
गोरी चिट्टी सी बुढ़िया.
मैं दूकानदार हूं
मैंने बेची है
क्रीम, लिपिस्टिक
और पाऊडर
गालों वाली.
माथे की
लम्बी, गोल, तिकोनी बेंदी
रेशम की साड़ी
मनहर कानों की बाली.
मैं दूकानदार हूँ
पर आज बेचता
जीवन के इन ताने बानों को

मानव के अधिकारों के बदले.
शोषण की चक्की में पिसती
मन्दिर, मस्जिद, गिर्जों में सिर धुनती
भूखी जनता की
करुण पुकारों के बदले.
मैं दूकानदार हूँ
फिर बेचूँगा अपने स्वर को
लाल क्रांति का
बिगुल बजाने को साथी.
निर्जीव कही जाने वाली
अपनी इस मृतक देह को
पूँजीवाद के सुदृढ़ दुर्ग पर
साम्यव द की ध्वजा फहराने को साथी.

*

पूँजीपति

भूखी, नंगी,
त्रस्त पड़ी मानवता पर
सैकड़ों हजार गिद्धों से
पूँजीपति छाये हैं.
नोच न च कर बोटी गोश्त की
पेट भर खाते हैं.
मँडराते हैं,
चील झपट्टा करते हैं,
उड़ाने भरते हैं,
फिर बैठ जाते हैं,
पास के किसी ऊँचे ठूँठ पर.
सुस्ताने को,
पूँजीपति.

भगवान की मौत

मन्दिर की आलीशान वेदी पर,
भगवान की मूर्ति प्रतिष्ठित थी.
विज्ञान की चकाचौंध से
आँखें चौंधियाईं जातीं थीं.
खुलतीं थीं कभी झँपी जाती थीं
तभी हवा के प्रबल थपेड़े से
अपमानित हो मूर्ति
लुढ़क पड़ी धरती पर
चूर चूर हो टुकड़े बिखर गये,
और
पत्थरों से सिर फोड़ कर
भगवान मर गया.

*

कविराज

मेरे पड़ोस में
रहते हैं एक कविराज
गाते हैं गीत प्यार के.
मिलन के इन्तजार के.
प्रगति से चिढ़ते हैं
साम्यवाद से नाक मुँह सिकोड़ते
गाँधी के चेले हैं
स्वर्ग नरक में आस्था नहीं.
ईश्वर से वास्ता नहीं.
मेरे पास आते हैं कभी कभी
कहता हूँ

समाज सुधार पर कुछ लिखिये
तो उबल पड़ते हैं
"बेकारी भुखमरी से मुझे क्या पड़ी
दुनिया जाये भाड़ में मुझे अपने से काम है"
मानो प्यार ही साहित्य का नाम है.
शायद किसी के प्रेम में बेकरार हैं.
जानते अक्षर दो चार हैं.
तभी मजनूं से झूम-झूम कर,
गाते हैं गीत प्यार के.
मिलन के इन्तजार के.

*

नचिकेता

नेता हैं
अभिनेता हैं
कमर नचा नचा कर चलते नचिकेता हैं
सज्जन हैं बड़े.
मंच पर होकर खड़े.
देश-भक्ति की बातें बतलाते हैं.
श्रम-दान का महत्व समझाते हैं.
कहते हैं हमने
जेलों में दंड पेले हैं.
गाँधी के चेले हैं.
देश के बड़े बड़े काम हैं.
सड़कों की धूल फाँकते होती शाम है.
प्रेसीडेन्ट हैं रिक्शा यूनियन के.
इकन्नी ऐंठने के.
जब रिक्शे वालों की होती पिटाई

मुँह फेरकर घर में घुस जाते हैं.
श्रीमतीजी के लँहगे में छुप जाते हैं.
थोड़ी देर में आकर
सेठों को सलाम झुकाते हैं.
चंदा पाते हैं.
नेता हैं
अभिनेता हैं
कमर नचा नचा कर चलते, नचिकेता हैं.

*

युग की माँग

मत टुकराओ
यह आवाज
नहीं मुझ निर्बल-जन की,
मिट्टी के कण-कण की—
यह आवाज
नहीं करा पाओगे.
मत समझो
यह ललकार उठी
हड्डी के ढाँचों से,
युग के ज्वाला मुखियों की—
यह ललकार
नहीं दफना पाओगे.
मत गतिरोध बनो
नव निर्माणी पथ में
सच कहता
जन सागर की लहरों से—
नहीं टकरा पाओगे.

मत बिसराओ
'रोटी रोजी के अधिकारों को'
यह आवाज--
नहीं मिट्टी के पुतलों की,
युग की माँग
नहीं ठुकरा पाओगे.

*

बंजारा

ले लो यह सौदा सस्ता,
इन्सानियत के बदले भगवान बेचता हूँ.
कीमत लगाई है हर वस्तु, चीज चीज की
सभ्यता भी बेचता दुनियाँ के देश देश की.
हैवानियत के बदले, कूड़े के ढेर से
ले लो यह सौदा सस्ता,
आया हूँ दूर से.
पूँजी खरीद कर साम्य बेचता,
धर्म के बदले विज्ञान बेचता,
बेकारी खरीद लूँ उद्योगों रुजगार से,
भुखमरी के बदले धन-धान्य बेचता.
ले लो यह सौदा सस्ता,
आया हूँ दूर से.
आया हूँ दूर से, जाना भी दूर है.
ले लो यह सौदा सस्ता,
इन्सानियत के बदले भगवान बेचता हूँ.

*

आवारा सूअर

हैल्थ मिनिस्टर से
निरीक्षण करते हुये,
गलियों में, सड़कों पर
स्वच्छन्द घूमते हैं.
ये आवारा सूअर
बस इन्हें ही आजादी मिली है.
भगाये से नहीं भागते हैं.
बड़े बूढ़ों को डाँटते हैं.
कीचड़ की मोटी तह लपेटे हुये
पाखानों को चाटते हैं.
ये आवारा सूअर
बस इन्हें ही आजादी मिली है.
गांधी के राज्य में
समता के अधिकारी यह
समाज में गन्दगी—
रोग के कीटाणु बांटते हुये
मतवाले हाथी से झूमते हैं.
झामते हैं.
ये आवारा सूअर
बस इन्हें ही आजादी मिली है.

*

मनकामेश्वर

सोमवार का दिन
भक्त जनों की भीड़ बड़ी है.
ढोंगी, भ्रष्टाचारी,
रिश्वतखोर,

अधिकारी गण.
चोर बाजारू,
पापी, बेईमान
व्यापारी जन.
सूदखोर,
लोभी बनिये,
चोर उचक्के,
कामचोर,
बटमारें,
भक्त-जनों की सरिता उमड़ी है.
मनकामेश्वर के दर्शन को.
आठ दिनों की पाप कमाई से
घी के दीपक लिये हाथ में,
भोले भमभोले बाबा को
हिस्सा देने,
स्वर्ग सीट की रिश्वत देने,
भक्त-जनों की सरिता उमड़ी है.
मनकामेश्वर के दर्शन को.
खड़े हुये हैं.
हाथ जोड़ आँखें मींचे,
खद्दरधारी कुछ नेता गण,
एम० पी०, एम० एल० ए० बन जाने की
लिये कामना मन में.
सवा मन घी का दीप जलाने की
कर रहे प्रतिज्ञा.
मनकामेश्वर
सब की इच्छा पूरण करते हैं.
सोमवार का दिन
भक्त जनों की भीड़ बड़ी है. *

कुत्ते और आदमी

कृष्ण पक्ष की रात थी
१० बजे का समय.
साइकिल पर चढ़ा
जा रहा था चला,
पार्क के सामने
कुत्ते भूकने लगे.
साइकिल तेज की
मुझ पर टूट पड़े,
पैरों में दाँत गड़ा
झपट कर गिरा दिया.
आया जो गुस्सा
निकाल रिवाल्वर,
निशाना साध
दबा दिया हुटका.
धांय धांय की आवाज से
वायु मंडल गूँज उठा,
घरों से निकल कर
लोगों ने घेर लिया.
तीन कुत्तों को मरा देख
भला बुरा कहने लगे.
मैं उनकी कुत्ता-भक्ति पर हँसा,
साइकिल पर चढ़ा,
चल दिया

ठंडी हवा

ठंडी हवा चली
मन को भली लगी.
उठे रजाई से
ठंड थी जोर की.
हाथों पर दस्ताने चढ़ा
टहलने चले,
ओवरकोट पहन कर.
चौराहे पर बड़ी,
भीड़ थी खड़ी.
देखा पास पहुंच कर
ठंड से सिकुड़ कर
तीन आदमी मरे.
ठंडी हवा चली,
मन को भली लगी.

*

धर्मों का फल है

जो
अपनी लोह कुदाली से
धरती की छाती फोड़ फोड़
चाँदी सोने के
अम्बार लगाता है.
फिर भी उसके बच्चे
रोटी के दो दो टुकड़ों को तरसा करते
उस जर्जर सी कुटिया में
वह भूखा ही सो जाता है

कुत्ते और आदमी

कृष्ण पक्ष की रात थी
१० बजे का समय.
साइकिल पर चढ़ा
जा रहा था चला,
पार्क के सामने
कुत्ते भूकने लगे.
साइकिल तेज की
मुझ पर टूट पड़े,
पैरों में दाँत गड़ा
झपट कर गिरा दिया.
आया जो गुस्सा
निकाल रिवाल्वर,
निशाना साध
दबा दिया हुटका.
धांय धांय की आवाज से
वायु मंडल गूँज उठा,
घरों से निकल कर
लोगों ने घेर लिया.
तीन कुत्तों को मरा देख
भला बुरा कहने लगे.
मैं उनकी कुत्ता-भक्ति पर हँसा,
साइकिल पर चढ़ा,
चल दिया
अखिलेश के यहाँ.

*

ठंडी हवा

ठंडी हवा चली
मन को भली लगी.
उठे रजाई से
ठंड थी जोर की.
हाथों पर दस्ताने चढ़ा
टहलने चले,
ओवरकोट पहन कर.
चौराहे पर बड़ी,
भीड़ थी खड़ी.
देखा पास पहुंच कर
ठंड से सिकुड़ कर
तीन आदमी मरे.
ठंडी हवा चली,
मन को भली लगी.

*

धर्मों का फल है

जो
अपनी लोह कुदाली से
धरती की छाती फोड़ फोड़
चाँदी सोने के
अम्बार लगाता है.
फिर भी उसके बच्चे
रोटी के दो दो टुकड़ों को तरसा करते
उस जर्जर सी कुटिया में
वह भूखा ही सो जाता है,

उसकी ही काली मेहनत के
शोषण से
ये डालरशाह
नित ही कोठी कारों में
जश्न मनाया करते हैं.
तिस पर भी
मंदिर की घंटी घड़ियालें चीख चीख कर कहते
यह उनके पूर्व जन्म के कर्मों का फल है.
तुम भट्टी में झौंक जला दो
उन गीता धर्म पुराणों को,
कह दो उनसे
यह पत्थर के भगवान
तुम्हारे धर्मों का फल है.

*

धुँआ

मील की चिमनी सा जग से
उठ रहा है धुँआ
काला धुँआ.
क्यूँकि युग भट्टियों में
ईंधन सा जल जल आज मानव
पिघला रहा है
मार्क्सवादी नीतियाँ.
ढालने को
शत शत लेनिन स्टालिनों को.

मैं चोर हूँ

मैं चोर हूँ,
हाँ हाँ मैंने चोरी की है
कुँजड़िन के डल्ले से दो मुर्गी के अन्डों की.
क्योंकि बच्चों का तड़प तड़प कर मरना नहीं-
देख सका था.
भूख से बेदम होती पत्नी का गिरना नहीं देख-
सका था.
उनकी भूख मिटाने को ही
मैंने यह दुस्साहस कर डाला.
जिसके बदले में अपने को हथकड़ियों से
जकड़ा पाया.
मैं चोर हूँ,
पर वे साहूकार हैं,
जो ऊँचे ऊँचे बंगलों में रहते हैं.
नित ही शत शत मानव का शोषण कर
जश्न मनाते
मोटर कारों में फिरते हैं.
तिस पर भी यह कानून के लम्बे लम्बे चोगे,
उनको दण्ड नहीं देते
अदब बजाते
रक्षा करते है.

*

स्टूडेन्ट कन्सेशन

सिनेमा के टिकटों में तो मिलता है कन्सेशन.
एक रुपये पाँच आने का देते हैं वन-वन.
प्रदर्शनी, नुमाइश, सर्कस, ड्रामों को छोड़िये.
रेलवे भी देती है अब स्टूडेन्ट कन्सेशन.

* * *

यह ठीक है हम के. एल. गर्ग की हत्या के अपराधी हैं.
और अदालत ने उसकी सजा भी उचित सुनाई है.
न हम रियायत मांगते हैं न क्षमा चाहते.
पर स्टूडेन्ट कन्सेशन तो मिलना ही चाहिये. *

गीतकार

गीत यदि गा सकूँ,
बसंत का
बहार का
चांदनी रात का
सनम का, प्यार का
गीतकार हूँ.
गीतकार हूँ.
गीत यदि गाऊँ मैं,
मज़दूर का
किसान का
भूखे इन्सान का
भुखमरी, अकाल का.
कामरेड,
प्रचारक,
बेरोजगार हूँ.
नहीं गीतकार हूँ.

नेताजी का गीत

टेक्स पर टेक्स दिये जाओ तुम,
आजादी की दरकार है.
कम पहनो, कम खाओ अन्न को,
जनता की सरकार है.

पांच बरस में स्वर्ग बनेगी,
धरती हिन्दुस्तान की.
वन्दे मातरम् , वन्दे मातरम्.

भाषण सुनकर जीना सीखो,
चिन्ता छोड़ो रोटी दाल की.
घर वालों को मर जाने दो,
जय बोल जवाहर लाल की.
वन्दे मातरम् , वन्दे मातरम्.

बिगड़ी जनता नहीं सुनती है,
सत्तावन के साल की.
बेड़ा पार करेगो वोही,
जय बोल जवाहर लाल की.
वन्दे मातरम् , वन्दे मातरम्.

*

भारत माता

कलकत्ता, बम्बई नगरों वाली.
चौड़े खेत, पठारों वाली.
जमुना, गंगा नदियों वाली.
दिल्ली सी रजधानी वाली.

भारत माता. भारत माता.

राम कृष्ण के अवतारों वाली.
गीता, वेद, पुराणों वाली.
आजाद, भगत से बलिदानों वाली.
तैंतीस कोटि संतानों वाली.

भारत माता, भारत माता.

मुक्ति विदेशी चंगुल से.
अपने ही पुत्रों द्वारा,
चन्द स्वार्थी कुत्तों द्वारा,
दुख पाती है, रोती है.

भारत माता, भारत माता.

*

मेरा परिचय

मैं उस धरती का वासी हूँ, जहाँ चांदी के टुकड़ों पर,
इन्सान बिका करता है, भगवान बिका करता है.
जहाँ पूजा नहीं मनुजता की, पूजा पत्थर की होती,
चांदी के टुकड़ों पर, ईमान बिका करता है.
इन्सान बिका करता है.
भगवान बिका करता है.

जहाँ रोटी रोटी को तड़प तड़प, मानव भूखा मर जाता,
पत्थर के टुकड़ों पर, मिष्ठानों का भोग चढ़ा करता है.
पानी, ढोंगी पंडों पर, चांदी की वर्षा होती.
चांदी के टुकड़ों पर, धर्म बिका करता है.
स्वर्ग बिका करता है.
वरदान बिका करता है.
चांदी के टुकड़ों पर जहां, मां बहिनों की अस्मत लुटती.
सतीत्व बिका करता है. सिन्दूर मिटा करता है.
उस धरती पर वहाँ की मिट्टी पर, कैसे गर्व करूं मैं.
प्रतिक्षण जहां मानव का, अपमान हुआ करता है.
अरमान बिका करता है.
सम्मान बिका करता है.

*

उम्मीदवार

जी भूलियेगा नहीं,
वोट मुझे ही दीजियेगा.
आप ही के क्षेत्र से खड़ा हूं,
आप ही की सेवा के वास्ते.
सांड़ का चुनाव चिन्ह है
संसद में जाकर सांड़ के समान ही
दहाड़े मचाऊँगा.
रौंद डालूँगा अपने पैरों तले
सारे सदस्यगणों को,
उच्चासन पर खुद ही आसन जमाऊँगा.
अगर कहीं आपके भाग्य से बन गया
प्रीमीयर,
मिनिस्टर,

या डिप्टीमिनिस्टर कहों.
मकान को खुदवा कर,
कोठी बनवा दूँगा आपकी.
विश्वास मानियेगा
सच कहता हूँ,
कसम खाकर सगे बाप की.

*

दुमदार आदमी

आपका परिचय
आप हैं
प्रगतिवादी
साम्यवादी
जातिवाद के कट्टर विरोधी,
सुप्रसिद्ध कवि, लेखक,
कहानीकार, उपन्यासकार,
श्री पं० दुखिलानन्द जी शर्मा.
क्या कहा आपने
"जातिवाद के कट्टर विरोधी और शर्मा".
जी कुछ नहीं कुछ नहीं
आप नहीं जानते
आदमी होता है
वे पूंछ का एक जानवर,
शायद इसलिये अपने नाम के पीछे
शर्मा, वर्मा, बंसल, कंसल, की
एक दुम लगा लेता है.

*

मैं भी सर्जन हूँ

तुम सर्जन हो
करते चीर फाड से रोगों का मर्दन हो,
क्लोरोफार्म से बेहोश कर
लिटा दिया है रोगी को
आपरेशन टेबिल पर,
कहते हो यक्ष्मा से
फैफड़े गल चुके हैं,
तेज़ नुकीले औजारों से
उन्हें काट छाँट कर निकालने में व्यस्त हो,
उनके स्थान पर कृत्रिम फैफड़े बैठा
रोगी को नव जीवन दे डालोगे.

मैं भी सर्जन हूँ
प्रगति के थपेड़ों से बेहोश कर
लिटा दिया है समाज को
साहित्य के धरातल पर
कहता हूँ प्राचीन संस्कृति
गल सड़ चुकी है,
तेज नुकीले भावों से
उसे काट छांट कर निकालने में व्यस्त हूँ,
उसके स्थान पर नयी संस्कृति बैठा
समाज को नव जीवन दे डालूँगा.

*

बन्दी कामरेड

मैं मर गया हूँ,
और समाज पर भार बन कर पड़ा हूँ

उस लाश की तरह
जिसे चार आदमी ढ़ोकर मरघट तक पहुँचाते हैं
मैं स्वयं नहीं मरा
मुझको मारा गया है,
क्योंकि समाज के पहरेदार
हम जैसे नवनिर्माण के समर्थकों का
मर जाना ही बेहतर समझते हैं.
मुझे लोहे के मोटे मोटे सींकचों में
बन्द कर दिया है
मेरी भावनाओं को कुचल डाला है
मेरी इच्छाओं को दबा दिया है
मेरी आवाज समाज तक पहुँच नहीं सकती
मैं स्वयं हिल डुल नहीं सकता
बल्कि समाज खींच खींच कर—
मेरी जिन्दगी के सफर को पूरा कर रहा है.

*

वेश्या के कमरे पर

आज न जाने तुम्हें क्यूँ देखकर,
याद आता जा रहा बचपना अपना.
समय की दूरी यूं ही मिट रही,
याद आ रही लाहौर की गली मुझे.
धूल के घरोंदे बना सैकड़ों,
रौंदते थे जहाँ पैरों तले.
तुम कभी रूठतीं थीं मुँह फेर कर,
मैं गुदगुदी मचा हँसाता था तुम्हें.
मैं कभी रूठता था मुँह फेर कर,
तुम गीत गा मनातीं थीं मुझे.
मैं बहन कह पुकारता था तुम्हें;

तुम भाई कह बुलाती थीं मुझे.
फिर समय का चक्र कुछ ऐसा चला,
लाहौर बीरान हो गया एक दिन.
तुम न जाने कहाँ खो गई,
मैं गीत गा ढूंढ़ता रहा देश भर.
आज अचानक तुम यहाँ मिलीं,
बाल स्मृतियाँ उमड़ने लगीं.
देखकर तुम्हारी यह दशा,
अश्रु आँखें झलने लगीं.
आओ गले लगा लूँ मैं तुम्हें,
भाई कह चूम लो तुम मुझे.
उठो हम साथ चल पड़ें,
आज नये जीवन डगर पर,
मेट दें धरा से प्राचीन रूढ़ियाँ,
गा उठें क्रांति गीत नये स्वर भर. *

मनुष्य

अल्ला मियाँ को खैरात बाँटते हम,
देते कुरान को हमी प्राण दान है.
मस्जिदें बनाई हमी ने यह ऊँचीं,
देते नमाज को हमी स्वर तान हैं.
हम से बड़ा है न कोई इस धरा पर,
हम सबसे महान सबसे महान हैं.
बाइबिल को चाहें तो मिटा डालें अभी,
चाहें युगों की दे डालें--अमरता.
ईसा तो हमीं सा इक आदमी था,
तब उसके चरणों में शीश क्यों झुकता.
करेंगे क्या गिर्जे समानता हमारी,
हम सबसे महान सबसे महान हैं.

कल्पना को दे रूप हमने,
ब्रह्म को सृष्टि मायक बनाया.
पत्थरों पर चित्रित कर उसे,
मन्दिरों में हमीं ने था बिठाया.
गीता पुराणों को रचा था हमीं ने, मिटायेंगे हमीं
हम सबसे महान सबसे महान हैं.

*

कवि ! क्या गायेगा, क्या गायेगा

टूटी पड़ी कलम कोने में
कागद भी जिसके पास नहीं,
केवल कोयले के टुकड़ों से
धरती पर लिखता रहता
अपने उर के अमरवाक्य,
दो क्षण में ही तो मिट जायेंगे.
जगती को क्या दे पायेगा.
कवि ! क्या गायेगा,
क्या गायेगा.
जिसके इस छोटे से उर में
अमित ज्ञान का कोष भरा है,
अपनी इस तुच्छ भेंट से
जो जग को अब तक दे पाया है,
क्या वह संतुष्ट हो जायगा.
कवि ! क्या गायेगा,
क्या गायेगा.
जीवन संघर्षों से लड़ लड़ कर
जो कंकाल मात्र अब शेष रहा है,
फिर भी नून, तेल, लकड़ी के
आर्थिक संघर्षों से जूझ रहा है.

छोड़ बिलखते निज स्त्री, बच्चे
उन धनिकों के सम्मुख
कर फैलाने को अस्मत लुटवाने को,
जो मानव का रक्त चूस कर
लक्ष्मी पति बने बैठे हैं.
असमय में ही
दुष्ट काल के क्रूर गाल में सो जायेगा.
कवि ! क्या गायेगा,
क्या गायेगा.
अथवा
अपने गीतों में हास नहीं
अब रुदन भरेगा,
प्यार नहीं अब उनमें पीड़ा की कम्पन होगी,
या उसके गीतों की ज्वाला
इस जग के पापी प्राणी को,
झुलसायेगी जला डालेगी,
तब इस जग का नव निर्माण करेगा.
नया संसार बसायेगा.
कवि ! क्या गायेगा,
क्या गायेगा.

*

भूदान यज्ञ

अपने को
भारतीय संस्कृत का प्रतिनिधि कहने वाले
आचार्य विनोवा भावे
महान क्रान्ति के हेतु
साम्यवाद के हेतु
आज मनुजता के आदर्शों पर

धूल डालते हैं,
भीख मांगते हैं,
भूमि मांगते हैं.
पर सोचो तो कब कोई
अपना सर्वस्व दान कोई करता है,
भरे पेट से जो कुछ बच जाता
एक टुकड़ा भर फेंक दिया करता है.
तब सोचो क्या भूदान यज्ञ से
साम्यवाद आ सकता है ?

यह तो फटने वाला है
आज अभावों का ज्वाला मुखि
उस पर मरहम मात्र लगाने भर को है.
मत समझो इनको क्रांति दूत,
मत इनके बहकाये में आओ,
यह तो पूँजीपतियों के दलाल,
वर्ग विषमता के रक्षक
इनकी सत्ता को, इनके मन को पहचानो.
जागो-जागो मजदूर किसानो.

*

विरासत

बाप मर गया है
इसी से
विरासत में मिली है मुझे,
सूद दर सूद
कर्ज में डूबी हुई
यह
टूटी सी झोपड़ी.

वृद्धा माँ—
दो मासूम भाइयों की
परिवरिश
युवति भगिनी के
विवाह का भार-
कफन को रहन रक्खे गये
गहनों के लिये
पत्नी की छींटाकसी.
तीन छटाँक-भोजन
पिताजी को स्वर्ग में भी—
भेजने के लिये
तेरह ब्राह्मणों
के
मोटे मोटे लेटर बक्स
भरने को
बढ़िया बढ़िया भोजन,
दही दूध मिष्ठानों का
मान सम्मान
बेच देने पर भी
प्रबन्ध न होने की चिन्ता.
और
उनके साहित्यिक जीवन से
विरासत में मिली है मुझे
छह आने सेर
बिकने वाली
रद्दी के
लम्बे चोड़े अम्बार,
प्रकाशित अप्रकाशित
पाडुँलिपियों की

मोटी मोटी फाइलें,
पूज्यनीय लेखनी,
चाँदी के फ्रेम में जड़ा
माँ सरस्वती का
छोटा सा भव्य चित्र-
धोबी,
नाई,
भंगी आदि के तकादों की—
लम्बी लम्बी फहरिस्त.
इतने पर भी
हृदय के छालों को
फोड़ने वाले,
परिचित, अपरिचित
सभी के द्वारा भेजे गये
समवेदनाओं के
यह ढ़ेर के ढ़ेर पत्र,
और
समवेदना को आ धमकने वाले
सम्बन्धियों
एवम्
चिरपरिचितों
के स्वागत में,
पान सुपारी,
नाश्ता आदि के
प्रबन्ध में
कर्ज की बढ़ती हुई
मोटी रकम.
मिली है
उनकी विरासत से

जिन्होंने
तीस साल तक
हिन्दी की सेवा में
अपना
तन, मन, धन
सब कुछ बेच डाला.
और
आज भी जिनको
स्थान स्थान पर
श्रद्धांजलियां
अर्पित की जा रही हैं.
पत्रों में—
शोक समाचार
प्रकाशित हो रहे हैं.
यह सब कुछ मिला है,
उन्हीं
श्रद्धेय पिता जी की
विरासत में मुझे.

*

आवाहन

जिस पथ का मैं राही हूं
उस पथ पर ही तुमको जाना है
मंजिल मेरी मजदूर किसानों की धरती.
मंजिल वही तुम्हारी मजदूर किसानों की धरती.
सदियों से मैं चलता आया
पर ऊब चुका हूँ अब
अपने इस एकांकी जीवन से.
तुम भी ऊब चुकी हो
अपने एकांकी पन से.

आओ हम तुम दोनों साथ साथ ही-
कदम बढ़ायें.
साथ साथ ही लाल क्रांति का बिगुल बजाते-
बढ़ते जायें.
वह देखो घिरती आती है
मेरे सर पर
महामृत्यु की काली छाया
पर सच जानना
मेरे उर में
जीने की साध अभी बाकी है.

जिससे देख सकूँ मैं
इस धरती पर
मजदूर किसानों के दिवस सुनहले,
और रूपहली रातों को.
देख सकूँ इन आँखों से
शोषित को शोषण के बदले
स्वर्ग का स्वप्न दिखाने वाले,

मंदिर के प्रांगण में नित ही
कृष्ण बन गोपियों से रास रचाने वाले,
इन पापी पंडों को,
मानव के शोषण से गुलछर्रे नित उड़ाते
पूँजीपतियों को,
राजा, महाराजा और बाजिदअली शाहों को
जो लाखों माँ बहिनों के सिन्दूरों से
जश्न मनाया करते हैं.
इस मजदूर किसानों की धरती पर
सड़क कूटने, भवनों की दीवार उठाते,
फिर भी मरते दम तक
अपने पापों का
प्रायश्चित तक भी कर न पाते.
जिस पथ का मैं राही हूँ
उस पथ पर ही तुमको जाना है
मंजिल मेरी मजदूर किसानों की धरती.
मंजिल वहा तुम्हारी मजदूर किसानों की धरती.

पर ऊब चुका हूँ मैं
अपने इस एकांकी जीवन से
तुम भी ऊब चुकी हो
अपने एकाँकी पन से
आओ हम तुम दोनों साथ साथ ही
कदम बढ़ायें.
साथ साथ ही लाल क्रांति का बिगुल बजाते
बढ़ते जायें.
वह देखो खड़ा हुआ है
ताल ठोक कर पूँजीवादी दानव
इस दानव के एक बूँद रक्त से

अहिरावण सम लाखों दानव पैदा हो जाते हैं.
तुम भी महाकाली का धर प्रचंड रूप
साम्यवादी खप्पर में,
धधका कर महाक्रांति की ज्वाला,
काट काट कर इस दानव के अंग प्रत्यंग
साम्यवाद के खप्पर में
एक एक बूँद रक्त
भस्म किये बढ़ती जाओ.
मजदूर किसानों का शासन लाने को.
मजदूर किसानों की धरती लाने को.
आओ हम तुम दोनों साथ साथ ही
कदम बढ़ायें.
साथ साथ ही लाल क्रांति का बिगुल बजाते
बढ़ते जायें.
तुम मेरी जीवन संगिनि हो
तुम मेरे जीवन पथ की साथी.
यह मजदूर किसानों का आसमान
यह मजदूर किसानों की धरती.
जब तक एक बूँद भी
रक्त रहेगा शेष हमारे तन में
हम लड़ते जांयगे.
हम बढ़ते जांयगे.
मजदूर किसानों की धरती पर
मजदूर किसानों का शासन लाने को.
मैं जिस पथ का राही हूं
उस पथ पर ही तुमको जाना है
मंजिल मेरी मजदूर किसानों की धरती.
मंजिल वही तुम्हारी मजदूर किसानों की धरती.
मैं ऊब चुका हूँ

अपने एकांकी जीवन से
तुम भी ऊब चुकी हो
अपने एकांकी पन से
आओ हम तुम दोनों साथ साथ ही
कदम बढ़ाये.
साथ साथ ही लाल क्रांति का बिगुल बजाते
बढ़ते जायें.

*

युगवाणी के कवि

सुमित्रा नंदनपंत के प्रति

तेरी कविता का शब्द शब्द,
तोड़ रहा संस्कृति के बंधन.
विगत सभ्यता की छाती पर,
कर शत शत भीषण घनवर्षण.
तू हामी है जन संस्कृत का,
चिर वर्ग विषमता का दुश्मन.
पूँजीगत जर्जर समाज पर,
रचता नित मानव का शासन.
तू भरता जन जन के मन में,
नित क्रांति क्रांति का उद्घोषण.
करता विनाश की छाती पर,
मानवता का निर्माण सृजन.
तू तत्पर मौतिक साधन से,
भू पर लाने को दिव्य स्वर्ग.
धन्य धन्य तेरे चरणों पर,
नत मस्तक मानव, श्रमिक वर्ग.

अपने आलोचकों से

यदि तुम
केवल लयदार,
तुकान्त पदावली को ही
कविता मानते हो
तो मेरे आदरणीय बन्धु
मैं कल्पना लोक वासी
कवि नहीं हूँ.
मनुष्यों की भीड़ में चलता फिरता
जिंदा आदमी हूँ.
यदि तुम
रोटी, रोजी के अधिकारों की माँग को
प्रचार कहते हो
तो
ओ शासक वर्ग के टुकड़ों पर
पलने वाले
कुत्तों
मैं प्रचारक हूँ,
कामरेड हूं,
और वह सब कुछ हूँ, जो कि तुम कहते हो.

*

कामरेड

मेरे घर की खिड़की के सम्मुख ही
पूँजी पतियों के
ऊँचे ऊँचे बँगलों से—
घिरी हुई इस बस्ती में,

चन्द्रमा के मस्तक पर
कलंक के समान ही
टो -फूटी, जीर्ण शीर्ण सी,
जो कुटिया है,
रहता उसमें
ढीला कुरता और पजामा पहने
गड्ढे में धँसी हुई आँखों पर
टूटे काले चश्मे का फ्रेम चढ़ाये.
बस्ती के सारे बच्चे
जिसको
कामरेड कहा
उपहास उड़ाने,
अभिवादन करते हैं.
पर
मैं बैठा बैठा निरखा करता
उसमें
प्रतिरूप कार्ल मार्क्स का
जिसने वर्ग चेतना फैलाने
अपने जीवन का कण कण
होम दिया था.
और
आज भी जिसके अनुयायी
सच्चे जनता के सेवक
कामरेड
जन जाग्रति फैलाने में
अपने जीवन का कण कण
होम रहे हैं
जिसके उपहार स्वरूप
आजाद हिन्द की सरकार

जी पतियों की सरकार
जन सुरक्षा के नाम पर
पूँजी पतियों की रक्षा को,
इन बर्बर भेड़ियों को
पकड़ पकड़ कर,
समाज से दूर
सड़ सड़ कर मर जाने को
काल कोठरियों में भेज रही है.

*

श्रद्धांजलि

कृष्ण कुमार के प्रति+

ओ
जाति भेद की बलवेदी पर
अपने प्राण विसर्जित करने वाले,
अजर अमर
तुम वीर महान.
मेरा वंदन,
जगती का अभिनंदन,
नई पीढ़ी के शत शत वंदन स्वीकार करो.
तुमने
अति सुन्दरतम
अपने शरीर को,
लोह दानवी× के नीचे
लुंज पुंज कर डाला,
पर
मस्तक पर
एक शिकन न आने पाई

ओ
श्रुप्त समाज की छाती पर
भीषणतम पद प्रहारक.
मेरा वंदन
जगती का अभिनन्दन
नई पीढ़ी के शत शत वंदन स्वीकार करो
ओ चिर विद्रोही
बलिदान तुम्हारा रंग लावेगा,
समाज की जर्जर तम छाती
अब कितने प्रहार सम्हालेगी.
नई पीढ़ी के मानस से
स्मृति न तुम्हारी मिट पावेगी,
युग-युग तक प्रदीप्त रहोगे
ध्रुव तारे से
प्रेम गगन में
चिर स्नेही
तुम्हारे चरणों में अन्तिम प्रणाम
मेरा वंदन
जगती का अभिनन्दन
नई पीढ़ी के शत-शत वदन स्वीकार करो.

*

+कृष्ण कुमार नामक नवयुवक ने जाति वैषम्य के कारण अपनी प्रेमिका से शादी न होने पर दिनांक १७ मई १९५६ ई० को रेल से कट कर आत्म हत्या करली थी. अभी न जाने कितने नवयुवकों की बलि समाज के अन्धे देवताओं की आखें खोल सकेगी.

×रेल

सुबह का आना

दूर
बहुत दूर
धरा से दूर गगन में,
हर रात को आता है ,
चाँद सितारों वाला.
उसके स्वागत में घूंघट खोल निशा मुसकाती है,
गुप चुप भाषा में कुछ बातें बतलाती है.
शायद कहती होगी मेरे जग की पीड़ा की करुण कहानी,
कुटियों के क्रंदन पर होती महलों की मनमानी.
जिसको सुनकर मैंने उसका मुरझाना देखा है,
उसकी आभा पर फीकी मुसकानों का आना देखा है.
शायद इस चिन्ता में ही वह घुल घुल कर मिट जाता है,
यूँ हर रात खतम होती है और सुबह आ जाता है.